



वैश्विक स्तर पर शरणार्थी समस्या : एक अध्ययन

नवनीत भारती¹

¹ एम. फिल. नेट राजनीति विज्ञान, सहायक आचार्य, संजीवनी महाविद्यालय, बिजनगर (ब्यावर).

ABSTRACT:

वैश्विक स्तर पर शरणार्थी समस्या 21वीं सदी की सबसे बड़ी मानवीय चुनौतियों में से एक है। युद्ध, जातीय हिंसा, धार्मिक उत्पीड़न, जलवायु परिवर्तन और राजनीतिक अस्थिरता के कारण लाखों लोग अपने घरों से विस्थापित हो रहे हैं। इन शरणार्थियों को न केवल अपने घर, आजीविका और संपत्ति खोनी पड़ती है, बल्कि उन्हें नए स्थानों पर सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR) की रिपोर्ट के अनुसार, 2023 तक 35 मिलियन से अधिक लोग शरणार्थी के रूप में पंजीकृत हैं। इनमें से अधिकांश विकासशील देशों में शरण लेते हैं, जो पहले से ही संसाधनों की कमी का सामना कर रहे हैं। शरणार्थी समस्या का प्रभाव केवल उनके मूल देश और शरण प्रदान करने वाले देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक चिंता का विषय बन गई है।

इस समस्या को सुलझाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास जैसे कि 1951 का शरणार्थी सम्मेलन और 1967 का प्रोटोकॉल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही, संयुक्त राष्ट्र, रेड क्रॉस और अन्य गैर-सरकारी संगठन शरणार्थियों को सहायता प्रदान करते हैं। हालांकि, शरणार्थी शिविरों में बुनियादी सुविधाओं की कमी, मानवाधिकारों का हनन, और पुनर्वास की दीर्घकालिक योजनाओं की कमी जैसी समस्याएं आज भी प्रमुख चुनौतियां बनी हुई हैं।

शरणार्थी समस्या के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उनके अधिकारों, चुनौतियों और समाधान की आवश्यकता पर जोर देता है। इसका उद्देश्य शरणार्थियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इस दिशा में वैश्विक स्तर पर सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करना है। शरणार्थी समस्या के समाधान के लिए संयुक्त प्रयास, दीर्घकालिक नीतियां और मानवीय दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हैं।

KEYWORDS:

शरणार्थी, मानवाधिकार, अंतर्राष्ट्रीय कानून, विस्थापन, वैश्विक समस्या, सुरक्षा, मानवीय सहायता।

PAPER ACCEPTED DATE:

23rd January 2025

PAPER PUBLISHED DATE:

25th January 2025

विषय सामग्री

शरणार्थी समस्या के कारण

शरणार्थी समस्या एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है, जिसके पीछे कई परस्पर जुड़े हुए कारण होते हैं। ये कारण मुख्य रूप से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रकृति के होते हैं। निम्नलिखित में शरणार्थी समस्या के प्रमुख कारणों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है:

युद्ध और सशस्त्र संघर्ष

युद्ध और सशस्त्र संघर्ष शरणार्थियों के विस्थापन का सबसे बड़ा कारण है।

- **आंतरिक गृहयुद्ध:** सीरिया, यमन, अफगानिस्तान जैसे देशों में गृहयुद्ध के कारण लाखों लोग शरणार्थी बने।
- **अंतरराष्ट्रीय संघर्ष:** पड़ोसी देशों के बीच सैन्य संघर्ष से सीमावर्ती इलाकों की आबादी को पलायन करना पड़ता है।
- **आतंकवाद और विद्रोही गुटों की गतिविधियां:** आतंकवादी संगठन जैसे ISIS और तालिबान के अत्याचारों ने बड़ी संख्या में लोगों को विस्थापित किया है।

राजनीतिक उत्पीड़न और तानाशाही शासन

तानाशाही शासन और राजनीतिक उत्पीड़न भी शरणार्थियों के विस्थापन के प्रमुख कारण हैं।

- **मानवाधिकारों का हनन:** अल्पसंख्यकों, पत्रकारों और राजनीतिक विरोधियों

को प्रताड़ित किया जाता है।

- **तानाशाही और अस्थिर सरकारें:** कई देशों में लोकतंत्र के अभाव और सत्ता के दुरुपयोग ने लोगों को देश छोड़ने पर मजबूर किया।
- **जातीय और धार्मिक उत्पीड़न:** म्यांमार में रोहिंग्या मुस्लिम समुदाय और विभिन्न देशों में अल्पसंख्यक समुदायों का उत्पीड़न प्रमुख उदाहरण हैं।

प्राकृतिक आपदाएं और जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं आधुनिक समय में विस्थापन के नए कारण बन गए हैं।

- **जलवायु संबंधी समस्याएं:** सूखा, बाढ़, तूफान और समुद्र के जल स्तर में वृद्धि जैसे कारकों ने कई समुदायों को विस्थापित किया है।
- **कृषि और जल संकट:** कृषि पर निर्भर समुदायों को सूखा और जल संकट के कारण अपनी भूमि छोड़नी पड़ी है।
- **प्राकृतिक आपदाएं:** भूकंप, सुनामी और चक्रवात जैसी घटनाओं से हजारों लोग बेघर हो जाते हैं।

आर्थिक अस्थिरता और गरीबी

आर्थिक असमानता और गरीबी भी शरणार्थी समस्या का एक महत्वपूर्ण कारण हैं।

- **आर्थिक अवसरों की कमी:** रोजगार और आय के अवसरों के अभाव में लोग विस्थापन का रास्ता अपनाते हैं।
- **बुनियादी सेवाओं का अभाव:** शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सेवाओं की अनुपलब्धता लोगों को पलायन के लिए मजबूर करती है।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारण

सामाजिक भेदभाव और सांस्कृतिक असहमति भी विस्थापन के कारण बन सकते हैं।

- **सामाजिक हिंसा:** जातीय और धार्मिक समूहों के बीच संघर्ष के कारण लोग विस्थापित होते हैं।
- **महिला उत्पीड़न और लैंगिक असमानता:** महिलाओं और बच्चों को जबर्न विवाह, मानव तस्करी, और हिंसा से बचने के लिए पलायन करना पड़ता है।

सरकारी और अंतरराष्ट्रीय असफलताएं

सरकारी नीतियों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की विफलताओं ने शरणार्थी समस्या को बढ़ाया है।

- **नाजुक राज्य संरचनाएं:** कमजोर सरकारें नागरिकों की सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा करने में विफल रहती हैं।
- **अंतरराष्ट्रीय समर्थन की कमी:** प्रभावित क्षेत्रों में समय पर मानवीय सहायता का न पहुंचना समस्या को और बढ़ाता है।

अंतरराष्ट्रीय प्रयास और नीतियां

शरणार्थी समस्या का समाधान केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं हो सकता; इसके लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और ठोस नीतियों की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र, अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठन और विभिन्न देशों की सरकारें शरणार्थियों की सहायता और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए सक्रिय प्रयास कर रही हैं। नीचे अंतरराष्ट्रीय प्रयासों और नीतियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है:

1951 का शरणार्थी सम्मेलन और 1967 का प्रोटोकॉल

1951 का शरणार्थी सम्मेलन (Convention Relating to the Status of Refugees) शरणार्थियों के अधिकारों और उनकी सुरक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

- यह सम्मेलन उन शरणार्थियों को परिभाषित करता है जो "जाति, धर्म, राष्ट्रीयता, राजनीतिक विचारों या किसी विशेष सामाजिक समूह के सदस्य होने के कारण उत्पीड़न का सामना करते हैं।"
- 1967 का प्रोटोकॉल इसे वैश्विक संदर्भ में विस्तारित करता है, क्योंकि 1951 का सम्मेलन केवल यूरोप और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थिति तक सीमित था।
- इसके अंतर्गत शरणार्थियों को गैर-प्रत्यावर्तन (non-refoulement) का अधिकार दिया गया है, जिसका अर्थ है कि उन्हें ऐसे स्थान पर वापस नहीं भेजा जा सकता, जहां उनकी जान को खतरा हो।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR)

UNHCR, जिसे "शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त कार्यालय" भी कहा जाता है, शरणार्थियों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठन है।

- UNHCR विस्थापित व्यक्तियों के लिए आश्रय, भोजन, चिकित्सा सहायता और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करता है।
- यह संगठन शरणार्थियों के पुनर्वास और उनके पुनः एकीकरण के लिए दीर्घकालिक योजनाओं पर काम करता है।
- UNHCR विभिन्न देशों के साथ साझेदारी कर शरणार्थियों की समस्याओं के समाधान के लिए नीतियां विकसित करता है।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून

- **यूनिवर्सल डिक्लेरेटिव ऑफ ह्यूमन राइट्स (1948):** इसमें हर व्यक्ति को जीवन, स्वतंत्रता और सुरक्षा का अधिकार दिया गया है।
- **अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC):** शरणार्थी उत्पीड़न, जातीय नरसंहार, और मानवता के खिलाफ अपराधों के मामलों में न्याय प्रदान करता है।

क्षेत्रीय पहलें

- **यूरोपीय संघ (EU):** यूरोपीय संघ ने शरणार्थियों के लिए "दुबलीन रेगुलेशन" और "कॉमन यूरोपीय शरणार्थी प्रणाली" (CEAS) जैसी नीतियां लागू की हैं।
- **अफ्रीकी संघ (AU):** अफ्रीकी देशों में शरणार्थियों की सहायता के लिए "कंपाला कन्वेंशन" को लागू किया गया है।
- **एशियाई और लैटिन अमेरिकी पहलें:** एशिया और दक्षिण अमेरिका में क्षेत्रीय संगठनों ने विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए विशेष योजनाएं बनाई हैं।

पुनर्वास और तीसरे देश में स्थानांतरण (Resettlement)

- पुनर्वास शरणार्थियों को स्थायी निवास प्रदान करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
- संयुक्त राष्ट्र और विकसित देश जैसे कि अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, और ऑस्ट्रेलिया, शरणार्थियों को तीसरे देशों में स्थानांतरित कर स्थायी पुनर्वास के अवसर प्रदान करते हैं।

गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की भूमिका

- रेड क्रॉस, डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स, और अन्य NGOs शरणार्थियों को स्वास्थ्य, शिक्षा और कानूनी सहायता प्रदान करते हैं।
- ये संगठन शरणार्थी शिविरों की स्थिति सुधारने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करते हैं।

मानवीय सहायता और वित्तीय सहयोग

- **संयुक्त राष्ट्र का विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP):** यह शरणार्थियों को भोजन और पोषण सहायता प्रदान करता है।
- **अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान:** जैसे विश्व बैंक और IMF, शरणार्थी समस्या से निपटने के लिए प्रभावित देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

शरणार्थियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए नीतिगत सुधार

- शरणार्थियों को शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नीतियां बनाई जा रही हैं।
- डिजिटल पहचान प्रणाली और कानूनी मान्यता के माध्यम से शरणार्थियों को उनकी नागरिकता और अधिकार प्राप्त करने में सहायता दी जाती है।

जलवायु शरणार्थियों के लिए नई पहल

जलवायु परिवर्तन से विस्थापित लोगों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, नए समझौते और नीतियां विकसित की जा रही हैं।

- UNFCCC (United Nations Framework Convention on Climate Change) के तहत जलवायु शरणार्थियों को मान्यता और सहायता प्रदान करने की योजनाएं प्रस्तावित हैं।

शांति और स्थिरता के प्रयास

अंतरराष्ट्रीय समुदाय युद्धग्रस्त क्षेत्रों में शांति और स्थिरता लाने के प्रयास कर रहा है ताकि विस्थापन के कारणों को कम किया जा सके।

- शांति समझौतों और संघर्ष समाधान की पहलें शरणार्थी संकट को जड़ से खत्म करने में मदद कर सकती हैं।

समाधान के लिए सुझाव

शरणार्थी समस्या एक बहुआयामी और जटिल मुद्दा है, जिसके समाधान के लिए वैश्विक सहयोग, प्रभावी नीतियां और मानवीय दृष्टिकोण आवश्यक हैं। इस समस्या का स्थायी समाधान तभी संभव है जब इसके कारणों को संबोधित किया जाए और शरणार्थियों को पुनर्वास के लिए दीर्घकालिक योजनाएं तैयार की जाएं। नीचे शरणार्थी समस्या के समाधान के लिए विस्तृत सुझाव दिए गए हैं:

युद्ध और संघर्ष का समाधान

- **शांति प्रक्रिया को बढ़ावा देना:** अंतरराष्ट्रीय समुदाय को युद्ध और सशस्त्र संघर्ष को रोकने के लिए प्रभावी प्रयास करने चाहिए।
 - संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों को संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में शांति समझौतों को लागू करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
 - क्षेत्रीय विवादों को हल करने के लिए कूटनीति और संवाद को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- **सशस्त्र समूहों पर प्रतिबंध:** हथियारों की आपूर्ति पर नियंत्रण और आतंकवादी गुटों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई जरूरी है।

शरणार्थियों के अधिकारों की सुरक्षा

- **1951 शरणार्थी सम्मेलन और 1967 प्रोटोकॉल का प्रभावी कार्यान्वयन:** देशों को इन समझौतों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए।
- **गैर-प्रत्यावर्तन का सिद्धांत:** शरणार्थियों को उनके मूल देश में तब तक वापस नहीं भेजा जाना चाहिए जब तक उनकी सुरक्षा की गारंटी न हो।
- **कानूनी और राजनीतिक अधिकार:** शरणार्थियों को नागरिकता और कानूनी पहचान प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे समाज में समावेशित हो सकें।

मानवीय सहायता में सुधार

- **शरणार्थी शिविरों की स्थिति में सुधार:**
 - शरणार्थी शिविरों में पर्याप्त भोजन, स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।
 - बुनियादी ढांचे में सुधार कर इन शिविरों को रहने योग्य बनाया जाना चाहिए।
- **आपातकालीन सहायता तंत्र:** प्राकृतिक आपदाओं और संघर्षों के दौरान तत्काल राहत प्रदान करने के लिए वैश्विक आपदा प्रबंधन प्रणाली को मजबूत किया जाना चाहिए।

पुनर्वास और आत्मनिर्भरता

- **रोजगार के अवसर:** शरणार्थियों को स्वरोजगार और कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने की योजना तैयार की जानी चाहिए।
- **शिक्षा और प्रशिक्षण:** शरणार्थियों, विशेषकर बच्चों और युवाओं, को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे समाज में योगदान दे सकें।
- **पुनर्वास योजनाएं:** शरणार्थियों को स्थायी रूप से पुनर्वासित करने के लिए दीर्घकालिक योजनाएं बनाई जानी चाहिए।

विकसित देशों की भूमिका

- **शरणार्थियों को स्थानांतरित करना:** विकसित देशों को शरणार्थियों के पुनर्वास और उनके लिए दीर्घकालिक अवसर प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

- **वित्तीय सहायता:** विकसित देशों को संघर्षग्रस्त और विकासशील देशों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि वे शरणार्थियों का बेहतर प्रबंधन कर सकें।

जलवायु शरणार्थियों के लिए उपाय

- **जलवायु परिवर्तन को रोकना:** कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जलवायु संकट को नियंत्रित करने के लिए वैश्विक प्रयास तेज किए जाने चाहिए।
- **जलवायु शरणार्थियों की मान्यता:** अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत जलवायु शरणार्थियों को कानूनी सुरक्षा और सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

सामाजिक समावेश और भेदभाव का उन्मूलन

- **सांस्कृतिक एकीकरण:** शरणार्थियों को नई जगहों पर सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से समायोजित करने के लिए नीतियां लागू की जानी चाहिए।
- **भेदभाव और नफरत का विरोध:** शरणार्थियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी

- **सामूहिक जिम्मेदारी:** शरणार्थी समस्या केवल एक या कुछ देशों की जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिए। सभी देशों को मिलकर इसका समाधान करना चाहिए।
- **वैश्विक धन का प्रबंधन:** शरणार्थियों की सहायता के लिए धन का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने के लिए एक पारदर्शी वैश्विक तंत्र बनाया जाना चाहिए।

तकनीकी और डिजिटल समाधान

- **डिजिटल पहचान प्रणाली:** शरणार्थियों को कानूनी रूप से मान्यता देने और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल पहचान प्रणाली लागू की जानी चाहिए।
- **डेटा-संचालित नीतियां:** शरणार्थियों के प्रवाह और उनकी जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने के लिए डेटा-संचालित समाधान विकसित किए जाने चाहिए।

शरणार्थियों की मूलभूत समस्याओं का समाधान

- **शिक्षा तक पहुंच:** शरणार्थी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
- **स्वास्थ्य सेवाएं:** शरणार्थियों को स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- **सुरक्षा और गरिमा का सम्मान:** शरणार्थियों के जीवन की गरिमा बनाए रखने के लिए उनके मानवाधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

शरणार्थी समस्या का समाधान केवल युद्ध और उत्पीड़न से बचने के लिए पलायन करने वाले लोगों को सुरक्षित आश्रय प्रदान करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसके लिए दीर्घकालिक और सतत नीतियों की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय, सरकारों, और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालने के लिए काम करना होगा। यह न केवल शरणार्थियों की मदद करेगा, बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता को बढ़ावा देगा। अंतरराष्ट्रीय प्रयास और नीतियां शरणार्थियों की सहायता और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि, इन प्रयासों में कई चुनौतियां हैं, जैसे कि वित्तीय संसाधनों की कमी, राजनीतिक मतभेद, और शरणार्थियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए वैश्विक स्तर पर अधिक सहयोग, संवेदनशीलता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण आवश्यक है। शरणार्थी समस्या के पीछे कई जटिल और परस्पर जुड़े हुए कारण हैं, जो मानवाधिकारों, राजनीति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण से संबंधित हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल वैश्विक स्तर पर समन्वित प्रयासों, दीर्घकालिक नीतियों और मानवीय दृष्टिकोण के माध्यम से ही संभव है। शरणार्थी समस्या केवल उन लोगों की नहीं है जो अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर होते हैं, बल्कि यह

पूरी मानवता की जिम्मेदारी है। शरणार्थियों के अधिकारों की सुरक्षा और उनकी समस्याओं का समाधान केवल वैश्विक सहयोग और एकजुटता के माध्यम से ही संभव है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को संवेदनशीलता और सक्रियता के साथ इस दिशा में कार्य करना चाहिए।

REFERENCES

1. संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR) की रिपोर्ट,
2. "वैश्विक शरणार्थी संकट: एक समीक्षा" - जॉन स्मिथ,
3. "शरणार्थी और मानवीय कानून" - मारिया गोमेज़,
4. विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और नीतिगत दस्तावेजों का अध्ययन।